ॐ श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
ॐ नमो महामायायै

# घटस्तवः

श्री-धर्माचार्य-कृत

# पंचस्तवी

का तीसरा स्तव

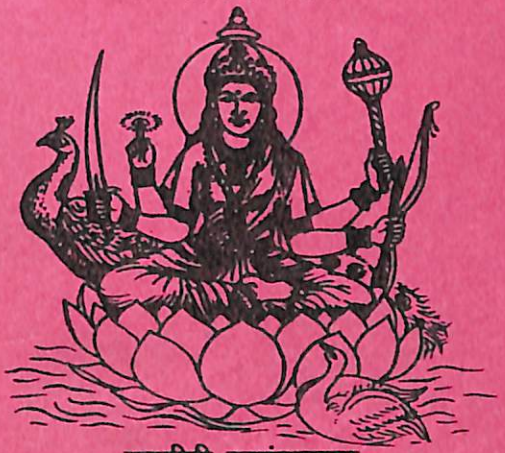

कश्मीरी रूपांतरकार

प्रो० ओंकारनाथ चंगू


मलने का पता:- भगवान गोपीनाथ जी आश्रम

- बोडी उदयवाला, जम्मू।
- पम्पोश एन्कलेव, नई दिल्ली-48

एस० एस० प्रिंटर्स, कच्ची छावनी, जम्मू

ॐ श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः

ॐ नमो महामायायै

# घटस्तवः

श्री-धर्माचार्य-कृत

# पंचस्तवी

का तीसरा स्तव

ह्रीं

कश्मीरी रूपांतरकार

प्रो० ओंकारनाथ चंगू

*मिलने का पता:-* **भगवान गोपीनाथ जी आश्रम**

- बोडी उदयवाला, जम्मू।
- पम्पोश एन्कलेव, नई दिल्ली-58

मई 1998

मूल्य 5/- रु0

एस० एस० प्रिंटर्स, कच्ची छावनी, जम्मू

# प्रस्तावना

श्री पञ्चस्तवी का यह काश्मीरी भाषानुवाद अतीव मधुर है। मूल पाठ की तुलना कई एक संस्करणों के साथ की गई है। विशेषकर अच्छिन्न गुरु परम्परा से प्राप्त पाठ के अनुसार इसका यह संस्करण प्रकाशित किया गया है। वह परम्परा सम्पादक को आचार्य श्री अमृतवाग्भव के द्वारा सम्पादित और प्रकाशित संस्करणों से प्राप्त हुई है।

स्तोत्र के भाव दार्शनिक रहस्यों की झलक से विशेष महत्त्व वाले हैं। फिर स्तोत्र भक्ति की पराकाष्ठा को लेकर के अतीव मधुर रूप में निर्मित हुआ है। इस स्तोत्र के काव्यात्मक सौन्दर्य अतीत मनमोहक हैं।

यह स्तोत्र-रत्न विशेषकर कश्मीर मण्डल में और किसी मात्रा में दक्षिण भारत में भी लोकप्रिय बन चुका है। प्रो० श्री ओंकारनाथ चूंगू के द्वारा निर्मित कश्मीरी भाषानुवाद के साथ प्रकाश्यमान यह स्तोत्ररत्न विशेष करके कश्मीरी पण्डित समाज में जनसाधारण में विशेषतया लोकप्रिय बन सकता है।

*- बलजिन्नाथ पण्डित*

5 मई 1998 जम्मू

# परिचय

पञ्चस्तवी एक अद्‌भुत स्तोत्र है। काश्मीर तथा दक्षिण भारत में इसका प्रचार प्राचीन काल से चला आ रहा है। इसके रचयिता धर्माचार्य को निर्धारित किया गया है। परन्तु उनके जन्म कर्म के बारे में अभी तक कोई निश्चय नहीं हो पाया है। भक्ति और कुण्डलिनी-योग सम्बन्धी इन स्तुति-श्लोकों के हिन्दी-अंग्रेज़ी तथा कश्मीरी भाषाओं में कई अनुवाद छप चुके हैं परन्तु शाक्तमतानुसार इनके सूक्ष्म अर्थ (रहस्यार्थ) प्रकट करने के प्रयास बहुत कम हुए हैं। काश्मीर के विद्धेद्वर्य पण्डित हरभट्‌ट शास्त्री ने इस स्तव-रत्न पर संस्कृत में एक विस्तृत टीका लिखी है जिसमें वेद, तन्त्र, पुराण अदि ग्रन्थों से उद्धारण लेकर बहुत हद तक रहस्य-निर्देशन किया गया है।

पंचस्तवी का काश्मीरी भाषा में पद्य-अनुवाद कई वर्ष पूर्व पहली बार पण्डित जियालाल जी सराफ ने किया। यह लोकप्रिय बन गया। पण्डित जनता में मां त्रिपुरसुन्दरी के प्रति भक्तिभाव अधिक जाग्रत हुआ। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष इन मीठे पद्यों को देवालयों, मन्दिरों और घरों में प्रेम-पूर्वक गाते हैं और शान्ति-सुख का अनुभव करते हैं। मूल संस्कृत में इस का पाठ करने से भक्त जन आह्लादित होते हैं ...

प्रो० ओंकारनाथ च्रंगू ने कई वर्ष पर्वू पंचस्तवी के अर्थ को कश्मीरी भाषा में अधिक स्पष्ट करने का प्रयत्न किया। देश से निर्वासित होने पर हम से कई बिछुड गए कई ओर मिले। चिदानन्दमयी भगवती महामाया की प्रेरणा से चरंगू जी ने अपने प्रयास को मानसिक सन्तोष से पूर्ण करने का निश्चय किया। फलतः यह कश्मीरी मधुर पद्य रूप अनुवाद आप के समक्ष है। मैने इस रूपान्तरण को ध्यान से सुना और पढ़ा और उनके परिश्रम का अनुमोदन करता हूँ। जगन्माता से हमारी प्रार्थना है, वह इस कार्य को यथा-योग्य पूर्ण करें जिससे उनको सन्तोष मिलेगा और जनता को भी यथार्थ लाभ होगा।

– *जानकीनाथ कौल 'कमल'*

जम्मू; जून 20, 1996

# दो शब्द

पञ्चस्तवी शिव-शक्ति धारा का एक महान ग्रन्थ है। मूल संस्कृत में इसका पाठ अत्यन्त लाभकारी तथा आनन्ददायी है। इसकी रचना नववीं शताब्दी के आस-पास होने की सम्भावना है और श्री धर्माचार्य को ही इस स्तोत्र का रचनकार माना गया है।

पंचस्तवी महामाया त्रिपुरसुन्दरी के पंचमुखी स्वरूप का विवेकात्मक ध्यान स्तोत्र है। इसके पांच स्तव क्रिया, ज्ञान, इच्छा, आनन्द और चित्त शक्ति के योग को दर्शाते हैं। इसके सूक्ष्म अर्थ का ज्ञान, अध्ययन, अनुभूतिसम्पन्न गुरु के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है।

मातृ भाषा वास्तव में मधुर तथा रमणीय लगती है इसीकारण मैंने इस स्तोत्र-रत्न को कश्मीरी भाषा में पद्य-रूप देकर सूक्ष्म अर्थ को ध्यान में रखते हुए यह प्रयास किया है। मेरा प्रयास कहां तक सफल रहा है यह प्रेमी-पाठक ही, जिन्हें पंचस्तवी का ज्ञान हो, बतला सकते हैं।

इस तीसरे स्तव में पराशक्ति की इच्छा-शक्ति प्रत्यक्ष रूप में सर्वगोचर है तथा महामाया का इच्छा-शक्ति स्वरूप विस्तारित किया गया है। इसी कारण सम्भवत: इसको घटस्तव नाम दिया गया है।

भगवान श्री गोपीनाथ जी महाराज के अपार अनुग्रह से ही यह अनुवाद सम्भव हुआ है, इसमें मुझे लेश-मात्र भी सन्देह नहीं और उन्हीं के प्रति इसे अर्पन भी किया जा रहा है।

सम्पादन करते हुए पद्य-रूपता को संवारने तथा स्पष्ट अर्थ प्रकट करने में मेरा पथ-प्रदर्शन मेरे विद्या-गुरु आदरणीय पं० जानकीनाथ कौल 'कमल' जी ने, जिन के चरणकमलों में बैठ कर मैंने पंचस्तवी का अध्ययन किया, मेरा मार्गदर्शन किया है, मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ ।

इस तीसरे 'घटस्तव' के श्लोकों के भावार्थ को कश्मीरी भाषानुवाद करने में आदरणीय श्री डॉ० बलजिन्नाथ पण्डित 'शैवदर्शन विशेषज्ञ' ने अपना बहुमूल्य समय निकाल कर मेरी सहायता तथा मार्ग-दर्शन किया, मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ और सदा आशीर्वाद का प्रार्थी रहूँगा।

यह पुस्तिका धर्म हेतु आप तक पहुँचाने में श्री प्राणनाथ कौल, 'सचिव भगवान गोपीनाथ जी ट्रस्ट', जिन्होंने मेरी हर प्रकार से सहायता की और मेरा उत्साह बढाया। श्री सोहनलाल जी खुर्दी और चमनलाल दुरानी ने इस की प्रिंटिंग और प्रूफ पढ़ने में मेरा हाथ बटाया, तथा श्री राजेन्द्र कम्पासी ने कम्प्यूटर कम्पोज़िंग में शुद्ध लिपि निकाल कर जो समय बचाया मैं इनका आभारी हूँ। भगवान गोपीनाथ जी ट्रस्ट के मित्रों ने अशोक जी रैणा की मधुर आवाज़ में इसका कैसेट भरवा कर आप के सामने पेश किया, इसके लिए मैं इन सब प्रेमी भक्तों का सदा आभारी रहूँगा।

- *ओमकारनाथ चंगू*

ॐ श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।।
ॐ श्री महामायायै नमः ।।

## ध्यान

ही महामाया चुॅ ज़गुॅत्ऽच माता
यि माया छि चाऽनी यछ़ा शखती
शिवस सूऽत्य अभेद रूप, छख शुॅद्ध - शखती
माया रूप्' किन्य भीद व्यछ़नान
मनुष्य भाव आस मायायि मंज़ वलनय
कर अथुॅ रो'ट युथ नुॅ रोजुॅ अथ बुॅ लोर
दिम वरदान करुॅ हऽ तिछ़ पूज़ा
युथ नुॅ ध्यान्' मंज़ डलन चाऽनी पाद
अस्य त'वय गुल्य गण्डिथ छिय प्यवान चेय परण
गछ़ प्रसन्न अऽ'सि कर अज्ञान दूर
माता गछ़ प्रसन्न अऽ'सि कर अज्ञान दूर।।

इस तीसरे 'घटस्तव' के श्लोकों के भावार्थ को कश्मीरी भाषानुवाद करने में आदरणीय श्री डॉ० बलजिन्नाथ पण्डित 'शैवदर्शन विशेषज्ञ' ने अपना बहुमूल्य समय निकाल कर मेरी सहायता तथा मार्ग-दर्शन किया, मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ औरा सदा आशीर्वाद का प्रार्थी रहूँगा।

यह पुस्तिका धर्म हेतु आप तक पहुँचाने में श्री प्राणनाथ कौल, 'सचिव भगवान गोपीनाथ जी ट्रस्ट', जिन्होंने मेरी हर प्रकार से सहायता की और मेरा उत्साह बढाया। श्री सोहनलाल जी खुर्दी और चमनलाल दुरानी ने इस की प्रिंटिंग और प्रूफ पढ़ने में मेरा हाथ बटाया, तथा श्री राजेन्द्र कम्पासी ने कम्प्यूटर कम्पोज़िंग में शुद्ध लिपि निकाल कर जो समय बचाया मैं इनका आभारी हूँ। भगवान गोपीनाथ जी ट्रस्ट के मित्रों ने अशोक जी रैणा की मधुर आवाज़ में इसका कैसेट भरवा कर आप के सामने पेश किया, इसके लिए मैं इन सब प्रेमी भक्तों का सदा आभारी रहूँगा।

*- ओमकारनाथ चंगू*

ॐ श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।।
ॐ श्री महामायायै नमः ।।

## ध्यान

ही महामाया चुॅ ज़गुॅत्ऽच माता
यि माया छि चाऽनी यछ़ा शखती
शिवस सूऽत्य अभेद रूप, छख शुॅद्ध - शखती
माया रूप्' किन्य भीद व्यछ़नान
मनुष्य भाव आस मायायि मंज़ वलनय
कर अथुॅ रो'ट युथ नुॅ रोजुॅ अथ बुॅ लोर
दिम वरदान करुॅ हऽ तिछ़ पूज़ा
युथ नुॅ ध्यान्' मंज़ डलन चाऽनी पाद
अस्य त'वय गुल्य गण्डिथ छिय प्यवान चेय परण
गछ़ प्रसन्न अऽ'सि कर अज्ञान दूर
माता गछ़ प्रसन्न अऽ'सि कर अज्ञान दूर।।

ॐ घटस्तवः तृतीयः

ॐ नमो महामायायै

देवि! त्र्यम्बकपत्नि! पार्वति! सति! त्रैलौक्यमातः! शिवे! शर्वाणि! त्रिपुरे! मृडानि! वरदे! रुद्राणि! कात्यायनि! भीमे! भैरवि! चण्डि! शर्वरि! कले! कालक्षये! शूलिनि! त्वत्पादप्रणताननन्यमनसः पर्याकुलान्पाहि नः।।१।।

ही महामाया य'छा शक्ति किन्य सूक्षम स्वरूप् यिथि् यिथि् चें दऽरिम'ति दीवी; त्र्यम्कपत्नि, पार्वति, सति, त्रैलोक्यमाता, शिवे तुँ' शर्वाणि त्रपुरा, मृडानि भोग मोक्ष वरदे रुद्राणि तुँ बेयि कात्यायणि भीमे, भैरवि, चण्डि त शर्वरि च्य अमाकला, कालनाश', त्रिशूल धारिणि यिमन'य स्वरूपन पादन छि न'मिथ'य अ'सि व्याकुलनं कर गांग'ल दूर।।

उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषव्यासक्तमूर्च्छा इव
प्राप्तप्रौढमदा इवाऽतिविरहग्रस्ता इवार्ता इव।
ये ध्यायन्ति हि शैलराजतनयां धन्यास्त एकाऽग्रत-
स्त्यक्तोपाधिविवृद्धरागमनसो ध्यायन्ति तान्सुभ्रुवः*।।२।।

जयकार छु साादुॅकन तिमन बागिवानन
द्याणुॅ विज़ि यिमन यिछ़ दशा छि आसान
व्वनुॅमथु ही ग्रहचारूॅ वऽल्यमुॅत्य ज़न
ज़हरुॅ दगि छ्वरुॅ छ्वरुॅ करुॅवुऽन्य ज़न
मदॅके नारुॅ पीडायि वऽल्यमुत्य ज़न
दरस लऽग्यमुॅत्य छ्यनुॅ गाऽमुत्य ज़न
आरुॅत्य ही ईकागर बनेमुॅत्य
मनुॅक्य राग साऽरी गऽल्यमुॅत्य ज़न
यिछु'य कल यिमन शैल्पुत्री छि द्यानस
तिमन यन्द्रॅय दीवी छि पूज़ान

---

* तान्सुभ्रुवरु अथवा वामभ्रुव

देवि ! त्वां सकृदेव यः प्रणमति, क्षोणीभृतस्तं नम-
न्त्याजन्म-स्फुरदङ्घ्रिपीठविलुठत्कोटीरकोटिच्छटाः
यस्त्वामर्चति सोऽर्च्यते सुरगणैर्यः स्तौति स स्तूयते
यस्त्वां ध्यायति तं स्मरार्तिविधुरा ध्यायन्ति वामभ्रुवः।३।

ही दीवी युस अकि लडिट अकि टुँकि
प्रणाम कऽरिथुँ'य प्राणामन गछ़ि लय
तमिस चक्रवर्त' राजुँ यस पादुँ पीरि प्यठ
स्यठाहन राज़न हंऽदि मुकट छि ढ़ोलन
त्युथ भाग्यवान राज़' तस ध्यानवानस
भखतिस चऽनिस सदा नमन करान
तस हंऽज़ि पूज़ायि दीवगण छि पूज़ान
त्वतायि तस हन्ज़ि छि सऽरी त्वता करान
च़्यथ कऽरि लीन युस चऽनिस ध्यानस
यन्द्रय शक्ति छि तऽसि न्यथ स्वरान
" प्रणाम, पूज़ा, त्वता, ध्यान चोन माता
भखत्यन आनन्द' वरशुन करान"

**ध्यायन्ति ये क्षणमपि त्रिपुरे ! हृदि त्वां**
**लावण्ययौवनधनैरपि विप्रयुक्ताः ।**
**ते विस्फुरन्ति ललितायतलोचनानां**
**चित्तैकभित्तिलिखितप्रतिमाः पुमांसः ।।४।।**

ही त्र'पुरा यिम सुन्दर ध्यान चोन
हृदयस मंज़ र'टन क्ष'न मात्रस
आ'सितन निर्धन सुन्दरतायि रो'स
या जवानी रोस तिम बासान
तस चानि ध्यान' यि'थ गुण भाव वोपदान
परिपूर्ण शूभिदार युथ बनान

सारैय सुन्दर यूगिनी शखतीय्'
तऽसि खनान मनुॅ किस अऽनस प्यठ

एतं किं नु दृशा पिबाम्युत विशाम्यस्याङ्गमङ्गैर्निजैः
किं वामुं निगलाम्यनेन सहसा किं वैकतामाश्रये।
तस्येत्थं विवशो विकल्पघटनाकूतेन योषिज्जनः
किं तद्यन्न करोति देवि ! हृदये यस्य त्वमावर्तसे ।।५।।

अनुग्रह कोताह तस भखतिस यस
विजि विज़ि छ़ख ब्यहान हृदयस मंज़
सुन्दर योवन शिव सन्जुॅ शखतीय
चोरि प्रकऽरि तस हन्ज़ भखती करान
नेत्रन ब्रोंह कऽनि वुॅछ वुॅछ ति वुछहोन
अङ्ग अङ्ग मिलवोन पानस सुत्य
मऽनि मंज़ रटिथॅ'य ब्योन नय त्रावहोन
पानस सुत्य अद' करहोन लय
ही दीवी यिम शिव सन्ज़' शखतीय
कम-कम सिद्धी तस न ब्रोंह कन्य थवान

विश्वव्यापिनि यद्वदीश्वर इति स्थाणावनन्याश्रयः
शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि! त्वय्येव तथ्यस्थितिः
इत्थं सत्यपि शक्नुवन्ति यदिमाः क्षुद्रा रुजो बाधितुं
त्वद्भक्तानपि, न क्षिणोषि च रुषा तद्देवि चित्रं महत्!

त्रयलोक जननी ही विश्वमाता
यिथुँ परम शिव छु ईश्वर नावुँ बो'ड
तिथय पाऽठि चे़ ति नाव प्रोवमुत शखती
युस तस शिवस निश ब़्युन छुन' केन्ह
यिछ़ शक्तिमान आऽसिथ जगत माता
छख रछान भखत्यन साधनायि मंज़
दिह' रूग व्यऽज़ आपदायि यो'द भखत्यन
चानि भखतीय मंज़ गांगऽल करान
आश्चर्य क्रूध रो'स अकि द्रष्टि तस
भखतिस साऽरिय रूग छख हरान

इन्दोर्मध्यगतां मृगाङ्कसदृशच्छायां मनोहारिणीं
पाण्डूत्फुल्लसरोरुहासनगतां स्निग्धप्रदीपच्छविम् ।
वर्षन्तोममृतं भवानि! भवतीं ध्यायन्ति ये देहिन-
स्ते निर्मुक्तरुजो भवन्ति विपदः प्रोज्झन्ति तान्दूरतः।।७।।

ही कुण्डनिली स्वरूपा शक्ति माता
पाद चऽनि अमृत वरशुन करान
पुनिम चन्द्रम-स मंज़ शीतल स्वरूप चोन
फोलमुत सफेद पम्पोश चे़' आसन
बऽरिथ चं़ऽगिस रेह सुोनसंज़ चमकान
यिम चोन युथ स्वरूप ध्यानस रटान
अमिय ध्यान' आपदायि रूग बेयि संकट
तिमन निश सदा छिय दूर रोज़ान

ह्री जगत जननी कर तुॅ अनुग्रह त्युथ
मे ति गऽछ़ यि'थुय ध्यान सदा रोजुन"

पूर्णेन्दोः शक्लैरिवातिबहलैः पीयूषपूरैरिव
क्षीराब्धेर्लहरीभरैरिव सुधापङ्कस्य पिण्डैरिव।
प्रालेयैरिव निर्मितं तव वपुर्ध्यायन्ति ये श्रद्धया
चित्तान्तर्निहतार्तितापविपदस्ते सम्पदं बिभ्रति।।८।।

पुनिम चन्द्रम' आकारुॅ शीतल हिश
अमृत जुॅयव ज़न पऽरनऽवमुॅच़
खीर-सागर मलखव ज़न बुॅऽनऽवमुॅच़
अमृत मेचव पानुॅ ज़न गऽरमुॅच़
सफाशीन थ'व्स्यवय् सुत्य ज़न बनेमुॅच़
रऽटि युस श्रद्धायि युथ मनस चोन ध्यान
आस्यस बे'यि मनस दुःख्, हच़र तुॅ दीनता
पीडायि ताप - त्रनवय मऽठिमुत्य
अद' तस बखॅतिस मूख्यलक्ष्मी बे'यि
यहलूक' तुॅ परलूक' समपदा बनान

ये संस्मरन्ति तरलां सहसोल्लसन्तीं
त्वां ग्रन्थिपञ्चकभिदं तरुणार्कशोणाम्।
रागार्णवे बहल-रागिणि मज्जयन्तीं
कृत्स्नं जगद्दधति चेतसि तान्मृगाक्ष्यः।।९।।

य'छा शखती किन्य चुॅ वोलु'सनसय यिवान
स्पन्द - गुण' पांचवय गण्ड मुॅच़रान
प्राता कालुक वुॅजुल सिर्य रूप ह्युह
सुशमनायि मंडज़ि अमिय' रुपुॅ प्रज़लान
सऽरिस्य ज़गतस छख प्रकाशमय करान
यिम भख'त्य विज़ि विज़ि यि ध्यान सुमरान
तिमन साधकन करनेश्वरी दीवीय्
हृदयस मंज़ न्यथ लोल् - ललवान

लाक्षारसस्नपितपङ्कज-तन्तुतन्वी-
मऽन्तः स्मरत्यऽनुदिनं भवतीं भवानि !।
यस्तं स्मरप्रतिममऽप्रतिमस्वरूपा
नेत्रोत्पलैर्मृगदृशो भृशमर्चयन्ति।।१०।।

ही भवऽनी युस न्यथ सुमर्ण क'रि
हृदसय मंज़ र'टि युथ चोन स्वरूप
पम्पोश नल्कि वाल' खोतुॅ ज़ऽव्युल ज़न
सुशमनायि मंडज़ि लाछि रंग् खसवुन
कामदीवस हिश' हरन' नेत्र' शखतीय्
तस भखतिस भाव सान पूज़ान
"कर अनुग्रह माता मे'ति ग'छ़ वुोपदुन
धारनायि मंज़ ठह'रुन युथ ध्यान"

स्तुमस्त्वां वाचमव्यक्तां हिमकुन्देन्दुरोचिषम् ।
कदम्बमालां विभ्राणामापादतललम्बिनीम् ।।११।।

शीन, कुन्दपोश, चन्द्रम, सफेद छि निर्मल
प्रकाशवान चोनुय स्वरूप माता
य'हय स्वरूप़ पशयन्ती, मध्मा तुॅ वैखुरी
वा'णी सोस माता चुॅय दारवऽ'ञ
नाऽलि चरणन ताम कदम्ब पोश' माला
परा शक्ति रूप अमर वऽणी
अ'थि परा वऽणी स्वरूपस भवऽनी
अऽस्य् करान भावनायि सोस अस्तुती

मूर्ध्नीन्दो: सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपाण्डुत्विषं
वर्षन्तीममृतं सरोरुहभुवो वक्त्रेऽपि रन्ध्रेऽपि च ।
अच्छिन्ना च मनोहरा च ललिता चातिप्रसन्नाऽपि च
त्वामेवं स्मरतां स्मरारिदयिते! वाक् सर्वतो वल्गति।।१२।।

कामदीव वष करवऽनिस तस शंकरस
जटायि प्यठ शूभान चन्द्रकला
तऽति फोलमुत-सफेद पम्पोश चे' आसन
शूभवऽनि छख ज़न निर्मल शीन
ब्रमरन्द्र प्यठ' मूलादारस कुन
पम्पोश वथ्'र अमृत वर्शान
शंकरवल्भा युस युथ ध्यान क'रि
तस चु'पऽरि अमृत वऽणी वुज़ान

ददातीष्टान्भोगान्क्षपयति रिपून्हन्ति विपदो
दहत्याधीन् व्याधीन् शमयति सुखानि प्रतनुते।
हठादन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टीष्टविरहं
सकृद्ध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कुरुते।।१३।।

शाम्भव वु॰पायि करि युस चोन ध्यान त्युथ
युथ गूपियन ओस गूपाल सुन्द
तस दिवान दीवी येछिमुत्यन यछायन
काम क्रूध मुह लूभ शऽथर गालान
आपदायि दूर करान मनऽकि मल ज़ालान
दिहि'कि रूग म'शरान सोख दिवान पूर
अन्दरिम दो'ख तुॅ द'ऽदि यिम न' कऽंसि भाविहे
अकि छ़ऽटि छस तिमन ध'ऽनिरावान
विर'हऽकि दुःख छस ट'ऽकि च़लरावान
को'स कथ छि युॅस नुॅ तस स्यद छख करान

यस्त्वां ध्यायति वेत्ति विन्दति जपत्यालोकते चिन्तय-
त्यन्वेति प्रतिपद्यते कलयति स्तौत्याश्रयत्यर्चति।
यश्च त्र्यम्बकवल्लभे ! तव गुणानाकर्णयत्यादरा-
त्तस्य श्रीर्नगृहादपैति विजयस्तस्याग्रतो धावति।।१४।।

त्रि न्यथर' शिव संज़ ही महारऽनी
करि चोन ध्यान युस साधनायि मंज़

युस ज़ानि प्रावि ज़प' साक्षातकार क'रि
चेनतन क'रि मानि त्रावि अभिमान
युस चेय ज़ानि त्वता क'रि शरण ग'छि
क'रि पूज़ा श्रदायि बोज़ि गुण गाण
तस लक्षमी घर' मन्ज़ छऽनुं नेरान
ज़य विजय ब्रोंह ब्रोंह सदा छिस पकान

किं किं दुःखं दनुजदलिनि ! क्षीयते न स्मृतायां
का का कीर्तिः कुलकमलिनि ! ख्याप्यते न स्तुतायाम्।
का का सिद्धिः सुरवरनुते ! प्राप्यते नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम्।।१५।।

काम क्रूध मुह लूभ राख्यसन चुॅ गालान
चानि सुमरऽनि कम न कम दुःख हटान
छख खारान कुॅलन गुल फोलरावान
चऽनि अस्तुती को'स नुॅ कीरती दिवान
दिवता छिय नमान ही ज़गतमाता
क्वस क्वस सिद्धी नुॅ चऽनि पूज़ा दिवान
अहम म'शरिथ मन'ऽ चेन्तन कऽरिथय
कुस यूग छु युस नुॅ पानुॅ स्यद सपदान
धर्म अर्थ काम ज़ीनिथ चेय पुशरि'थ
द्वयुत् चलान तुॅ मूखिकिुॅ बर चुॅ मुचरान

ये देवि ! दुर्धरकृतान्तमुखान्तरस्था
ये कालि ! कालघनपाशनितान्त-बद्धा ।
ये चण्डि ! चण्डगुरुकल्मषसिन्धुमग्ना-
स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव ।।१६।।

पऽज़ि मन्' न्यथ चॉऽन्य समरना यिम करान
त्रनवय मल तिमन यिथऽ' दूर गछ़ान
ज़्यन मरन्' भय यिम कालन वऽलिमुत्य
दीवी रूप' छख तिमन भय हरान
कालचे फांसि रऽज़ि यिम गंडऽन आमुत्य
का'ली स्वरूप छख तिमन रज़ऽ च़टान
कठिनसि पाप सागरस यिम छि फऽटिमुत्य
चण्डी स्वरूप छख तिमन तार दिवान
"ज़ेनॅ मरनुॅ भय कालुॅ पाश् ज़ाल मोकलान
पुॅज़ि पाप' सागरस अपोर छख निवान"

लक्ष्मीवशीकरणचूर्ण - सहोदराणि
त्वत्पादपङ्कजरजांसि चिरं जयन्ति ।
यानि प्रणाममिलितानि नृणां ललाटे
लुम्पन्ति दैवलिखितानि दुरक्षराणि ।।१७।।

भोग लक्षमी माता वश करन' खऽतरय
चान्यन पादन हन्ज़ गर्द छि बऽड अवशद

स्वॅय गर्द छि माता भखत्यन सदा दिवान
भाग्यवान रोज़नुक अख वरदान
प्रणाम कऽरि कऽरि युस गरद लगान ललाटस
तस मिटान छि प्रालब्दऽकि खो'टि अछर
"दितुॅ वरदान बुॅति कर'ह' तिथि प्रणाम
युथ मे' ति शेरहऽख खोट कर्मलोन"

रे मूढा: ! किमयं वृथैव तपसा काय: परिक्लिश्यते
यज्ञैर्वा बहुदक्षिणै: किमितरे रिक्तीक्रियन्ते गृहा: ।
भक्तिश्चेदविनाशिनी भगवतीपादद्वयी सेव्यता-
मुन्निद्राम्बुरुहातपत्रसुभगा लक्ष्मी: पुरो धावति।।१८।।

ही मूरखुॅ भखति रो'स अज्ञान तुॅ मूह' सोस
क्याज़ि छुख वृथ तप ज़प बऽडि करान
छुख फजूल शरीरस कष्ट वातनावान
दखिनायि दिय दिय घरसु'य फरान
योद अटल श्वद भखती छय मनस मंज़
त्राव सोरुय रठ तस ह'न्दि पाद
ज्ञान पाद कृपा पाद द्रुनवय चर्ण बस
तऽसि ज़गतअम्बायि हुॅन्दि रठ मनस
अदुॅ फोल्यमुत्य पम्पोश छत्रदऽरी
स्वय महालक्षमी पऽकिय चे ब्रोंह ब्रोंह

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि
सेवे न कंचन निरस्तसमस्तदैन्यः
श्लक्ष्णं वसे मधुरमद्मि भजेवरस्त्री-
र्देवी हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनुः ।।१९।।

हच़र दीनता बुोछ़र सोरुय हटयोमुत
मे यिय छुम थे्किथ छुस सुय छावान
न छुम कंऽसि मंगनु'य न छुस कंऽसि ठगनुॅय
बुॅ छुस पान' मऽलिख न कंऽसि नोकर
दिह अभिमान् रो'स यि सुन्दर पुॅशाख छुम
आनन्द रस छुम मुॅधुर ख्यन चन
सोरुय में' आसवुन सारिन्य बासवुन
छम कुलकामदीन मे' हृदयस मंज़

शब्दब्रह्ममयि ! स्वच्छे ! देवि ! त्रिपुरसुन्दरि ।
यथाशक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरि !।।२०।।

ही शब्दब्रह्म रूप' परा-शखती माज्य
ही निर्मल मध्यमायि प्यठ दीवी
ही त्रपुरसन्दरी वैखुरी माता
भव अभव अतिभव चऽन्य् क्रीडा
यथा शखती मेन्य जप बेयि पूज़ा
कर स्वीकार छख चु' परमीश्वरी

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः।
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा।।२१।।

ही वरदायनी मंगलकारिनी
छम मे' अभिलाशा यि' पूर' करतम
ध्यानवान मूक्षस्यदी तुॅ सो'ख प्रऽवितन
न्यंद्यायि वाऽलि ति रऽच बुॅऽद प्राऽवितन
अभेदमय शाम्भव अवस्था मे' बऽनितन
गुरऽ' दीव रूज़ितनम अनुग्रहस प्यठ

दर्शनात्पापशमनी जपान्मृत्युविनाशिनी
पूजिता दुःखदौर्भाग्यहरा त्रिपुरसुन्दरी।।२२।।

ही पापनाशनी मृत्युविनाशनी
दुर्भाग्यहारिणी त्रिपुरसन्दुरी
दर्शन चानि पाप तुॅ जपॅ किन्य मृत्यू
पूज़ायि भक्तयन छि दुर्भाग्य हटान
"ही त्रपोरसुन्दरी छुस बुॅ शरनागत
मे' ति गऽछ़' युथ अनुग्रह सपदुन"

नमामि यामिनी-नाथ-लेखालङ्कृतकुन्तलाम्।
भवानीं भवसन्तापनिर्वापणसुधानदीम्।।२३।।

चन्दरमुॅ कला चे' मस'तस प्यठ छि शूभान
ज़ोतान, अमृतं गंगा ज़न वसान
य'हय अमृत धारा ज़गत अम्बा
भखत्यन त्रनवय ज़र कासान
अ'थि निरमल स्वरूपस मा'ऽज भवाऽनी
छिय न्यथ प्रथ स'ऽरिय चेय नमान

**मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्गतम्।**
**त्वया तत्क्षम्यतां देवि ! कृपया परमेश्वरि।।२४।।**

मंत्र, क्रया, व्यद', केंह नय बुॅ ज़ानय
अद' यिछ़ त'जिम ति'छ़ त्वता मे' कऽर'मय
माऽज छख दयालू करिज़्यम क्षमा तथ
छख ब़ख'चनहार - माता स्वरूप
ही दीवी ही परमेश्वरी माऽज
र'छिज़्यम कृपायि सु'त्य दामनस तल
" गछ़ दयायि रानिब्रऽरि दितुॅ मेति दर्शुन
छांफ च़लिहेम तुॅ गलहॅऽनम मल "

इति पञ्चस्तव्यां घटस्तवस्तृतीयः।

गुरुस्तुति - "अनुग्रह" - प्रो० ओंकारनाथ च्रंगू

ज़प' पानुँ सतगुरु नाव च़ड्य
गुरु' नाव भवसर तार छुय
गुरु' सुन्द दपुन दय सुन्द वनुन
न्यथ मनि मंज़ गछ़ि स्वरुन
हनि हनि यि दिह छलनावि सुय - ज़प०
ब्रह्मा वेशन महेश ज़ानुँनस
रठ पाद गुड' गुरु' सऽन्दि मन'स
वोन्सुत यि पानुँ परमेश्वरण - ज़प० -
गुरु' सुन्द भर गव त्युथ मन्दर
यति कांह नुँ कथ रोज़ान अन्दर
भावुन तुँ बोजुन राज़ छुय - ज़प० -
येमि दिहु' चे प्रावुन छुय स्थठा
युथ न रोज़ि पतुँ केन्ह ज़ाननुय
गछ शरण यि ज़ान करनावि सुय - जप० -
गांगऽल' छि च़लरावऽनि मनस
भखती छि सऽनिरावऽनि मनस
पांच़न ह्यसन फिरनावि सुय - ज़प० -
खऽऽसि वऽसि चि हेऽरि व्यस्तारि सुय
द्वादाशान्त, ध्यान ठहरावि सुय
अन्दरिम ति शेछं मनुँ भावि सुय - ज़प० -
समनायि प्यठ' उनमनायि कुन
ओंकार' ज़ान ज़ानुँनावि सुय
पावि पावि बाह पाऽव्य खारि सुय - ज़प० -
बऽब' संऽज़ दया यति तऽसि बने
पुशरावि पान युस तऽसि यते
ज़पनावि गोविन्द नाव सुय - ज़प० - -